संधि

<u>सामान्य संधि नियम</u>

जैसे कि पहले बताया गया है, संस्कृत में व्यंजन और स्वर के योग से ही अक्षर बनते हैं । संधि के विशेष नियम हम आगे देखेंगे, पर उसका सामान्य नियम यह है कि संस्कृत में व्यंजन और स्वर आमने सामने आते ही वे जुड जाते हैं;

पुष्पम् आनयति = पुष्पमानयति

शीघ्रम् आगच्छति = शीघ्रमागच्छति
त्वम् अपि = त्वमपि

संस्कृत में संधि के इतने व्यापक नियम हैं कि सारा का सारा वाक्य संधि करके एक शब्द स्वरुप में लिखा जा सकता है; देखिए -

ततस्तमुपकारकमाचार्यमालोक्येश्वरभावनायाह ।
अर्थात् - ततः तम् उपकारकम् आचार्यम् आलोक्य ईश्वर-भावनया आह ।

इसके सारे नियम बताना यहाँ अनपेक्षित होगा, परंतु, सामान्यतः संधि तीन तरह की होती है; स्वर संधि, विसर्ग संधि, और व्यंजन संधि । विसर्ग संधि के सामान्य नियम हम “विसर्ग” प्रकरण में देख चूके हैं । स्वर और व्यंजन संधि की सामान्य जानकारी व उदाहरण नीचे दीये जा रहे हैं ।

सजातीय स्वर आमने सामने आने पर, वह दीर्घ स्वर बन जाता है; जैसे,

अ / आ + अ / आ = आ

अत्र + अस्ति = अत्रास्ति
भव्या + आकृतिः = भव्याकृतिः
कदा + अपि = कदापि

इ / ई + इ / ई = ई

देवी + ईक्षते = देवीक्षते
पिबामि + इति = पिबामीति

गौरी + इदम् = गौरीदम्

उ / ऊ + उ / ऊ = ऊ

साधु + उक्तम = साधूक्तम्
बाहु + ऊर्ध्व = बाहूर्ध्व

ऋ / ॠ + ऋ / ॠ = ॠ

पितृ + ऋणम् = पितॄणम्
मातृ + ऋणी = मातॄणी

जब विजातीय स्वर एक मेक के सामने आते हैं, तब निम्न प्रकार संधि होती है ।
अ / आ + इ / ई = ए
अ / आ + उ / ऊ = ओ
अ / आ + ए / ऐ = ऐ
अ / आ + औ / अ = औ
अ / आ + ऋ / ॠ = अर्

<u>उदाहरण</u>
उद्यमेन + इच्छति = उद्यमेनेच्छति
तव + उत्कर्षः = तवोत्कर्षः
मम + एव = ममैव
कर्णस्य + औदार्यम् = कर्णस्यौदार्यम्
राजा + ऋषिः = राजर्षिः

परंतु, ये हि स्वर यदि आगे-पीछे हो जाय, तो इनकी संधि अलग प्रकार से होती है;
इ / ई + अ / आ = य / या
उ / ऊ + अ / आ = व / वा
ऋ / ॠ + अ / आ = र / रा

<u>उदाहरण</u>
अवनी + असम = अवन्यसम
आदि + आपदा = आद्यापदा
भवतु + असुरः = भवत्वसुरः
उपविशतु + आर्यः = उपविशत्वार्यः
पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा

मातृ + इच्छा = मात्रिच्छा

उपर दिये हुए “य” और “व” की जगह, “अय्”, “आय्”, “अव्” या “आव्” एसी संधि भी होती है, जैसे;
ए + अन्य स्वर = अय्
ऐ + अन्य स्वर = आय्
ओ + अन्य स्वर = अव्
औ + अन्य स्वर = आव्

<u>उदाहरण</u>
मन्यते + आत्मानम् = मन्यतयात्मानम्
तस्मै + अदर्शयत् = तस्मायदर्शयत्
प्रभो + एहि = प्रभवेहि
रात्रौ + एव = रात्रावेव

परंतु, “ए” या “ओ” के सामने “अ” आये, तो “अ” लुप्त होता है, और उसकी जगह पर “ऽ“ (अवग्रह चिह्न) प्रयुक्त होता है ।
वने + अस्मिन् = वनेऽस्मिन्
गुरो + अहम् = गुरोऽहम्

<u>व्यंजन संधि</u>

व्यंजन संधि के काफी नियम हैं, पर नियमों के जरीये इन्हें सीखना याने इन्हें अत्यधिक कठिन बनाने जैसा होगा ! इस लिए केवल कुछ उदाहरणों के ज़रीये इन्हें समजने का प्रयत्न करते हैं;

ग्रामम् + अटति = ग्राममटति
देवम् + वन्दते = देवं वन्दते

ग्रामात् + आगच्छति = ग्रामादागच्छति
सम्यक् + आह = सम्यगाह
परिव्राट् + अस्ति = परिव्राडस्ति

सन् + अच्युतः = सन्नच्युतः
अस्मिन् + अरण्ये = अस्मिन्नरण्ये

छात्रान् + तान् = छात्रांस्तान्

अपश्यत् + लोकः = अपश्यल्लोकः

KIDS CONVENT SECONDARY SCHOOL MADANGANJ-KISHANGARH

तान् + लोकान् = ताँल्लोकान्

एतत् + श्रुत्वा = एतच्छ्रुत्वा
वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया
आ + छादनम् = आच्छादनम्

अवदत् + च = अवदच्च
षट् + मासाः = षण्मासाः

सम्यक् + हतः = सम्यग्घतः / सम्यग् हतः
एतद् + हितम् = एतद्धितम् / एतद्हितम्

संधि शब्द का अर्थ है मेल। दो निकटवर्ती वर्णों के परस्पर मेल से जो विकार (परिवर्तन) होता है वह संधि कहलाता है। जैसे - सम् + तोष = संतोष। देव + इंद्र = देवेंद्र। भानु + उदय = भानूदय।

संधि के भेद

संधि तीन प्रकार की होती हैं -

1. स्वर संधि
2. व्यंजन संधि
3. विसर्ग संधि

स्वर संधि

दो स्वरों के मेल से होने वाले विकार (परिवर्तन) को स्वर-संधि कहते हैं। जैसे - विद्या + आलय = विद्यालय।

स्वर-संधि पाँच प्रकार की होती हैं -

1. दीर्घ संधि
2. गुण संधि
3. वृद्धि संधि
4. यण संधि

5. अयादि संधि

दीर्घ संधि

ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ के बाद यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ आ जाएँ तो दोनों मिलकर दीर्घ आ, ई, और ऊ हो जाते हैं। जैसे -

(क) अ + अ = आ --> धर्म + अर्थ = धर्मार्थ / अ + आ = आ --> हिम + आलय = हिमालय

आ + अ = आ --> विद्या + अर्थी = विद्यार्थी / आ + आ = आ --> विद्या + आलय = विद्यालय

(ख) इ और ई की संधि

इ + इ = ई --> रवि + इंद्र = रवींद्र ; मुनि + इंद्र = मुनींद्र

इ + ई = ई --> गिरि + ईश = गिरीश ; मुनि + ईश = मुनीश

ई + इ = ई- मही + इंद्र = महींद्र ; नारी + इंदु = नारींदु

ई + ई = ई- नदी + ईश = नदीश ; मही + ईश = महीश .

(ग) उ और ऊ की संधि

उ + उ = ऊ- भानु + उदय = भानूदय ; विधु + उदय = विधूदय

उ + ऊ = ऊ- लघु + ऊर्मि = लघूर्मि ; सिधु + ऊर्मि = सिंधूर्मि

ऊ + उ = ऊ- वधू + उत्सव = वधूत्सव ; वधू + उल्लेख = वधूल्लेख

ऊ + ऊ = ऊ- भू + ऊर्ध्व = भूर्ध्व ; वधू + ऊर्जा = वधूर्जा

गुण संधि

इसमें अ, आ के आगे इ, ई हो तो ए ; उ, ऊ हो तो ओ तथा ऋ हो तो अर् हो जाता है। इसे गुण-संधि कहते हैं जैसे -

(क) अ + इ = ए- नर + इंद्र = नरेंद्र ; अ + ई = ए- नर + ईश = नरेश

आ + इ = ए- महा + इंद्र = महेंद्र ; आ + ई = ए महा + ईश = महेश

KIDS CONVENT SECONDARY SCHOOL MADANGANJ-KISHANGARH

(ख) अ + उ = ओ ज्ञान + उपदेश = ज्ञानोपदेश ; आ + उ = ओ महा + उत्सव = महोत्सव

अ + ऊ = ओ जल + ऊर्मि = जलोर्मि ; आ + ऊ = ओ महा + ऊर्मि = महोर्मि।

(ग) अ + ऋ = अर् देव + ऋषि = देवर्षि

(घ) आ + ऋ = अर् महा + ऋषि = महर्षि

वृद्धि संधि

अ, आ का ए, ऐ से मेल होने पर ऐ तथा अ, आ का ओ, औ से मेल होने पर औ हो जाता है। इसे वृद्धि संधि कहते हैं। जैसे -

(क) अ + ए = ऐ एक + एक = एकैक ; अ + ऐ = ऐ मत + ऐक्य = मतैक्य ;

आ + ए = ऐ सदा + एव = सदैव ; आ + ऐ = ऐ महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य

(ख) अ + ओ = औ वन + ओषधि = वनौषधि ; आ + ओ = औ महा + औषधि = महौषधि ;

अ + औ = औ परम + औषध = परमौषध ; आ + औ = औ महा + औषध = महौषध

यण संधि

(क) इ, ई के आगे कोई विजातीय (असमान) स्वर होने पर इ ई को 'य्' हो जाता है।

(ख) उ, ऊ के आगे किसी विजातीय स्वर के आने पर उ ऊ को 'व्' हो जाता है।

(ग) 'ऋ' के आगे किसी विजातीय स्वर के आने पर ऋ को 'र्' हो जाता है। इन्हें यण-संधि कहते हैं।

इ + अ = य् + अ यदि + अपि = यद्यपि ई + आ = य् + आ इति + आदि = इत्यादि।

ई + अ = य् + अ नदी + अर्पण = नद्यर्पण ई + आ = य् + आ देवी + आगमन = देव्यागमन

(घ) उ + अ = व् + अ अनु + अय = अन्वय उ + आ = व् + आ सु + आगत = स्वागत

उ + ए = व् + ए अनु + एषण = अन्वेषण ऋ + अ = र् + आ पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा

अयादि संधि

ए, ऐ और ओ औ से परे किसी भी स्वर के होने पर क्रमशः अय्, आय्, अव् और आव् हो जाता है। इसे अयादि

संधि कहते हैं।

(क) ए + अ = अय् + अ ने + अन + नयन

(ख) ऐ + अ = आय् + अ गै + अक = गायक

(ग) ओ + अ = अव् + अ पो + अन = पवन

(घ) औ + अ = आव् + अ पौ + अक = पावक

औ + इ = आव् + इ नौ + इक = नाविक

व्यंजन संधि

व्यंजन का व्यंजन से अथवा किसी स्वर से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है उसे व्यंजन संधि कहते हैं। जैसे- शरत् + चंद्र = शरच्चंद्र।

(क) किसी वर्ग के पहले वर्ण क्, च्, ट्, त्, प् का मेल किसी वर्ग के तीसरे अथवा चौथे वर्ण या य्, र्, ल्, व्, ह या किसी स्वर से हो जाए तो क् को ग् च् को ज्, ट् को ड् और प् को ब् हो जाता है। जैसे -

क् + ग = ग्ग दिक् + गज = दिग्गज। क् + ई = गी वाक् + ईश = वागीश

च् + अ = ज् अच् + अंत = अजंत ट् + आ = डा षट् + आनन = षडानन

प + ज + ब्ज अप् + ज = अब्ज

(ख) यदि किसी वर्ग के पहले वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) का मेल न् या म् वर्ण से हो तो उसके स्थान पर उसी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण हो जाता है। जैसे -

क् + म = ड़् वाक् + मय = वाड़्मय च् + न = ञ् अच् + नाश = अञ्नाश

ट् + म = ण् षट् + मास = षण्मास त् + न = न् उत् + नयन = उन्नयन

प् + म् = म् अप् + मय = अम्मय

(ग) त् का मेल ग, घ, द, ध, ब, भ, य, र, व या किसी स्वर से हो जाए तो द् हो जाता है। जैसे -

त् + भ = द्भ सत् + भावना = सद्भावना त् + ई = दी जगत् + ईश = जगदीश

त् + भ = द्भ भगवत् + भक्ति = भगवद्भक्ति त् + र = द्र तत् + रूप = तद्रूप

त् + ध = द्ध सत् + धर्म = सद्धर्म

(घ) त् से परे च् या छ् होने पर च, ज् या झ् होने पर ज्, ट् या ठ् होने पर ट्, ड् या ढ् होने पर ड् और ल होने पर ल् हो जाता है। जैसे -

त् + च = च्च उत् + चारण = उच्चारण त् + ज = ज्ज सत् + जन = सज्जन

त् + झ = ज्झ उत् + झटिका = उज्झटिका त् + ट = ट्ट तत् + टीका = तट्टीका

त् + ड = ड्ड उत् + डयन = उड्डयन त् + ल = ल्ल उत् + लास = उल्लास

(ङ) त् का मेल यदि श् से हो तो त् को च् और श् का छ् बन जाता है। जैसे -

त् + श् = च्छ उत् + श्वास = उच्छ्वास त् + श = च्छ उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट

त् + श = च्छ सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र

(च) त् का मेल यदि ह् से हो तो त् का द् और ह् का ध् हो जाता है। जैसे -

त् + ह = द्ध उत् + हार = उद्धार त् + ह = द्ध उत् + हरण = उद्धरण

त् + ह = द्ध तत् + हित = तद्धित

(छ) स्वर के बाद यदि छ् वर्ण आ जाए तो छ् से पहले च् वर्ण बढ़ा दिया जाता है। जैसे -

अ + छ = अच्छ स्व + छंद = स्वच्छंद आ + छ = आच्छ आ + छादन = आच्छादन

इ + छ = इच्छ संधि + छेद = संधिच्छेद उ + छ = उच्छ अनु + छेद = अनुच्छेद

(ज) यदि म् के बाद क् से म् तक कोई व्यंजन हो तो म् अनुस्वार में बदल जाता है। जैसे -

म् + च् = ं किम् + चित = किंचित म् + क = ं किम् + कर = किंकर

म् + क = ं सम् + कल्प = संकल्प म् + च = ं सम् + चय = संचय

म् + त = ं सम् + तोष = संतोष म् + ब = ं सम् + बंध = संबंध

म् + प = ं सम् + पूर्ण = संपूर्ण

(झ) म् के बाद म का द्वित्व हो जाता है। जैसे -

KIDS CONVENT SECONDARY SCHOOL
MADANGANJ-KISHANGARH

म् + म = म्म सम् + मति = सम्मति म् + म = म्म सम् + मान = सम्मान

(ञ) म् के बाद य्, र्, ल्, व्, श्, ष्, स्, ह् में से कोई व्यंजन होने पर म् का अनुस्वार हो जाता है। जैसे -

म् + य = ं सम् + योग = संयोग म् + र = ं सम् + रक्षण = संरक्षण

म् + व = ं सम् + विधान = संविधान म् + व = ं सम् + वाद = संवाद

म् + श = ं सम् + शय = संशय म् + ल = ं सम् + लग्न = संलग्न

म् + स = ं सम् + सार = संसार

(ट) ऋ,र्, ष् से परे न् का ण् हो जाता है। परन्तु चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, श और स का व्यवधान हो जाने पर न् का ण् नहीं होता। जैसे -

र् + न = ण परि + नाम = परिणाम र् + म = ण प्र + मान = प्रमाण

(ठ) स् से पहले अ, आ से भिन्न कोई स्वर आ जाए तो स् को ष हो जाता है। जैसे -

भ् + स् = ष अभि + सेक = अभिषेक नि + सिद्ध = निषिद्ध वि + सम + विषम

विसर्ग-संधि

विसर्ग (:) के बाद स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में जो विकार होता है उसे विसर्ग-संधि कहते हैं। जैसे-मनः + अनुकूल = मनोनुकूल।

(क) विसर्ग के पहले यदि 'अ' और बाद में भी 'अ' अथवा वर्गों के तीसरे, चौथे पाँचवें वर्ण, अथवा य, र, ल, व हो तो विसर्ग का ओ हो जाता है। जैसे -

मनः + अनुकूल = मनोनुकूल अधः + गति = अधोगति मनः + बल = मनोबल

(ख) विसर्ग से पहले अ, आ को छोड़कर कोई स्वर हो और बाद में कोई स्वर हो, वर्ग के तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण अथवा य्, र, ल, व, ह में से कोई हो तो विसर्ग का र या र् हो जाता है। जैसे -

निः + आहार = निराहार निः + आशा = निराशा निः + धन = निर्धन

(ग) विसर्ग से पहले कोई स्वर हो और बाद में च, छ या श हो तो विसर्ग का श हो जाता है। जैसे -

निः + चल = निश्चल निः + छल = निश्छल दुः + शासन = दुश्शासन

(घ) विसर्ग के बाद यदि त या स हो तो विसर्ग स् बन जाता है। जैसे -

नमः + ते = नमस्ते निः + संतान = निस्संतान दुः + साहस = दुस्साहस

(ङ) विसर्ग से पहले इ, उ और बाद में क, ख, ट, ठ, प, फ में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का ष हो जाता है। जैसे -

निः + कलंक = निष्कलंक चतुः + पाद = चतुष्पाद निः + फल = निष्फल

(ड)विसर्ग से पहले अ, आ हो और बाद में कोई भिन्न स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे -

निः + रोग = निरोग निः + रस = नीरस

(छ) विसर्ग के बाद क, ख अथवा प, फ होने पर विसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे -

अंतः + करण = अंतःकरण

KIDS CONVENT SECONDARY SCHOOL
MADANGANJ-KISHANGARH